

श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 3



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 15

ईश्वर के साम्राज्य का वर्णन

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: श्री मैत्रेय ने कहा : हे विदुर, महर्षि कश्यप की पत्नी दिति यह समझ गई कि उसके गर्भ में स्थित पुत्र देवताओं के विक्षोभ के कारण बनेंगे। अतः वह कश्यप मुनि के तेजवान वीर्य को एक सौ वर्षों तक निरन्तर धारण किये रही, क्योंकि यह अन्यों को कष्ट देने वाला था।

श्लोक 2: दिति के गर्भधारण करने से सारे लोकों में सूर्य तथा

चन्द्रमा का प्रकाश मंद हो गया और विभिन्न लोकों के देवताओं ने उस बल से विचलित होकर ब्रह्माण्ड के स्रष्टा ब्रह्मा से पूछा, “सारी दिशाओं में अंधकार का यह विस्तार कैसा?”

श्लोक 3: भाग्यवान् देवताओं ने कहा : हे महान्, जरा इस अंधकार को तो देखो, जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं और जिससे हमें चिन्ता हो रही है। चूँकि काल का प्रभाव आपको छू नहीं सकता, अतएव आपके समक्ष कुछ भी अप्रकट नहीं है।

श्लोक 4: हे देवताओं के देव, हे ब्रह्माण्ड को धारण करने वाले, हे अन्यलोकों के समस्त देवताओं के शिरोमणि, आप आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही जगत्‌ओं में सारे जीवों के मनोभावों को जानते हैं।

श्लोक 5: हे बल तथा विज्ञानमय ज्ञान के आदि स्रोत, आपको नमस्कार है। आपने भगवान् से पृथक्कृत रजोगुण स्वीकार किया है। आप बहिरंगा शक्ति की सहायता से अप्रकट स्रोत से उत्पन्न हैं। आपको नमस्कार।

श्लोक 6: हे प्रभु, ये सारे लोक आपके भीतर विद्यमान हैं और सारे जीव आपसे उत्पन्न हुए हैं। अतएव आप इस ब्रह्माण्ड के कारण हैं और जो भी अनन्य भाव से आपका ध्यान करता है, वह भक्तियोग प्राप्त करता है।

श्लोक 7: जो लोग श्वास प्रक्रिया को साध कर मन तथा इन्द्रियों को वश में कर लेते हैं और इस प्रकार जो अनुभवी प्रौढ़ योगी हो जाते हैं उनकी इस जगत में पराजय नहीं होती। ऐसा इसलिए है, क्योंकि योग में ऐसी सिद्धि

के कारण, उन्होंने आपकी कृपा प्राप्त कर ली है।

श्लोक 8: ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत सारे जीव वैदिक आदेशों से उसी प्रकार संचालित होते हैं जिस तरह एक बैल अपनी नाक से बँधी रस्सी (नथुनी) से संचालित होता है। वैदिक ग्रंथों में निर्दिष्ट नियमों का उल्लंघन कोई नहीं कर सकता। उस प्रधान पुरुष को हम सादर नमस्कार करते हैं, जिसने हमें वेद दिये हैं।

श्लोक 9: देवताओं ने ब्रह्मा की स्तुति की: कृपया हम पर कृपादृष्टि

रखें, क्योंकि हम कष्टप्रद स्थिति को प्राप्त हो चुके हैं; अंधकार के कारण हमारा सारा काम रुक गया है।

श्लोक 10: जिस तरह ईंधन अग्नि को वर्धित करता है उसी तरह दिति के गर्भ में कश्यप के वीर्य से उत्पन्न भ्रूण ने सारे ब्रह्माण्ड में पूर्ण अंधकार उत्पन्न कर दिया है।

श्लोक 11: श्रीमैत्रेय ने कहा : इस तरह दिव्य ध्वनि से समझे जाने वाले ब्रह्मा ने देवताओं की स्तुतियों से प्रसन्न होकर उन्हें तुष्ट करने का प्रयास किया।

श्लोक 12: ब्रह्माजी ने कहा : मेरे मन से उत्पन्न चार पुत्र सनक, सनातन, सनन्दन तथा सनत्कुमार तुम्हारे पूर्वज हैं। कभी कभी वे बिना किसी विशेष इच्छा के भौतिक तथा आध्यात्मिक आकाशों से होकर यात्रा करते हैं।

श्लोक 13: इस तरह सारे ब्रह्माण्डों का भ्रमण करने के बाद वे आध्यात्मिक आकाश में भी प्रविष्ट हुए, क्योंकि वे समस्त भौतिक कल्मष से मुक्त थे। आध्यात्मिक आकाश में अनेक आध्यात्मिक लोक हैं, जो

वैकुण्ठ कहलाते हैं, जो पुरुषोत्तम भगवान् तथा उनके शुद्धभक्तों के निवास-स्थान हैं और समस्त भौतिक लोकों के निवासियों द्वारा पूजे जाते हैं।

श्लोक 14: वैकुण्ठ लोकों में सारे निवासी पुरुषोत्तम भगवान् के समान आकृतिवाले होते हैं। वे सभी इन्द्रिय-तृप्ति की इच्छाओं से रहित होकर भगवान् की भक्ति में लगे रहते हैं।

श्लोक 15: वैकुण्ठलोकों में भगवान् रहते हैं, जो आदि पुरुष हैं और जिन्हें वैदिक वाङ्मय के माध्यम से समझा जा सकता है। वे

कल्मषरहित सतोगुण से ओतप्रोत हैं,
जिसमें रजो या तमो गुणों के लिए
कोई स्थान नहीं है। वे भक्तों की
धार्मिक प्रगति में योगदान करते हैं।

श्लोक 16: उन वैकुण्ठ लोकों में
अनेक वन हैं, जो अत्यन्त शुभ हैं। उन
वनों के वृक्ष कल्पवृक्ष हैं, जो सभी
ऋतुओं में फूलों तथा फलों से लदे
रहते हैं, क्योंकि वैकुण्ठलोकों में हर
वस्तु आध्यात्मिक तथा साकार होती
है।

श्लोक 17: वैकुण्ठलोकों के
निवासी अपने विमानों में अपनी

पत्नियों तथा प्रेयसियों के साथ उड़ानें भरते हैं और भगवान् के चरित्र तथा उन कार्यों का शाश्वत गुणगान करते हैं, जो समस्त अशुभ गुणों से सदैव विहीन होते हैं। भगवान् के यश का गान करते समय वे सुगन्धित तथा मधु से भरे हुए पुष्पित माधवी फूलों की उपस्थिति तक का उपहास करते हैं।

श्लोक 18: जब भौरों का राजा भगवान् की महिमा का गायन करते हुए उच्च स्वर से गुनगुनाता है, तो कबूतर, कोयल, सारस, चक्रवाक,

हंस, तोता, तीतर तथा मोर का शोर
अस्थायी रूप से बन्द पड़ जाता है।
ऐसे दिव्य पक्षी केवल भगवान् की
महिमा सुनने के लिए अपना गाना
बन्द कर देते हैं।

श्लोक 19: यद्यपि मन्दार, कुन्द,
कुरबक, उत्पल, चम्पक, अर्ण,
पुन्नाग, नागकेशर, बकुल, कुमुदिनी
तथा पारिजात जैसे फूलने वाले पौधे
दिव्य सुगन्ध से पूरित हैं फिर भी वे
तुलसी द्वारा की गई तपस्या से सचेत
हैं, क्योंकि भगवान् तुलसी को विशेष
वरीयता प्रदान करते हैं और स्वयं

तुलसी की पत्तियों की माला पहनते
हैं।

श्लोक 20: वैकुण्ठनिवासी वैदूर्य,
मरकत तथा स्वर्ण के बने हुए अपने
अपने विमानों में यात्रा करते हैं। यद्यपि
वे विशाल नितम्बों तथा सुन्दर हँसीले
मुखों वाली अपनी-अपनी प्रेयसियों के
साथ सटे रहते हैं, किन्तु वे उनके
हँसी मजाक तथा उनके सुन्दर
मोहकता से कामोत्तेजित नहीं होते।

श्लोक 21: वैकुण्ठलोकों की
महिलाएँ इतनी सुन्दर हैं कि जैसे देवी
लक्ष्मी स्वयं है। ऐसी दिव्य सुन्दरियाँ

जिनके हाथ कमलों के साथ क्रीड़ा करते हैं तथा पाँवों के नुपूर झंकार करते हैं कभी कभी उन संगमरमर की दीवालों को जो थोड़ी थोड़ी दूरी पर सुनहले किनारों से अलंकृत हैं, इसलिए बुहारती देखी जाती है कि उन्हें भगवान् की कृपा प्राप्त हो सके।

श्लोक 22: लक्ष्मियाँ अपने उद्यानों में दिव्य जलाशयों के मूँगे से जड़े किनारों पर तुलसीदल अर्पित करके भगवान् की पूजा करती हैं। भगवान् की पूजा करते समय वे उभरे हुए नाकों से युक्त अपने अपने सुन्दर

मुखों के प्रतिबिम्ब को जल में देख सकती हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो भगवान् द्वारा मुख चुम्बित होने से वे और भी अधिक सुन्दर बन गई हैं।

श्लोक 23: यह अतीव शोचनीय है कि अभागे लोग वैकुण्ठलोकों के विषय में चर्चा नहीं करते, अपितु ऐसे विषयों में लगे रहते हैं, जो सुनने के लायक नहीं होते तथा मनुष्य की बुद्धि को संभ्रमित करते हैं। जो लोग वैकुण्ठ के प्रसंगों का त्याग करते हैं, तथा भौतिक जगत की बातें चलाते हैं, वे

अज्ञान के गहनतम अंधकार में फेंक दिये जाते हैं।

श्लोक 24: ब्रह्माजी ने कहा : हे प्रिय देवताओ, मनुष्य जीवन इतना महत्वपूर्ण है कि हमें भी ऐसे जीवन को पाने की इच्छा होती है, क्योंकि मनुष्य रूप में पूर्ण धार्मिक सत्य तथा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यदि इस मनुष्य जीवन में कोई व्यक्ति भगवान् तथा उनके धाम को नहीं समझ पाता तो यह समझना होगा कि वह बाह्य प्रकृति के प्रभाव से अत्यधिक ग्रस्त है।

श्लोक 25: आनन्दभाव में जिन व्यक्तियों के शारीरिक लक्षण परिवर्तित होते हैं और जो भगवान् की महिमा का श्रवण करने पर गहरी-गहरी साँस लेने लगते हैं तथा प्रस्वेदित हो उठते हैं, वे भगवद्धाम को जाते हैं भले ही वे ध्यान तथा अन्य अनुष्ठानों की तनिक भी परवाह न करते हों। भगवद्धाम भौतिक ब्रह्माण्डों के ऊपर है और ब्रह्मा तथा अन्य देवतागण तक इसकी इच्छा करते हैं।

श्लोक 26: इस तरह सनक, सनातन, सनन्दन तथा सनत्कुमार

नामक महर्षियों ने अपने योग बल से आध्यात्मिक जगत के उपर्युक्त वैकुण्ठ में पहुँच कर अभूतपूर्व सुख का अनुभव किया। उन्होंने पाया कि आध्यात्मिक आकाश अत्यधिक अलंकृत विमानों से, जो वैकुण्ठ के सर्वश्रेष्ठ भक्तों द्वारा चालित थे, प्रकाशमान था और पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् द्वारा अधिशासित था।

श्लोक 27: भगवान् के आवास वैकुण्ठपुरी के छः द्वारों को पार करने के बाद और सजावट से तनिक भी आश्चर्यचकित हुए बिना, उन्होंने सातवें

द्वार पर एक ही आयु के दो चमचमाते प्राणियों को देखा जो गदाएँ लिए हुए थे और अत्यन्त मूल्यवान आभूषणों, कुण्डलों, हीरों, मुकुटों, वस्त्रों इत्यादि से अलंकृत थे।

श्लोक 28: दोनों द्वारपाल ताजे फूलों की माला पहने थे, जो मदोन्मत्त भौरों को आकृष्ट कर रही थीं और उनके गले के चारों ओर तथा उनकी चार नीली बाहों के बीच में पड़ी हुई थीं। अपनी कुटिल भौहों, अतृप्त नथनों तथा लाल लाल आँखों से वे कुछ कुछ क्षुब्ध प्रतीत हो रहे थे।

श्लोक 29: सनक इत्यादि मुनियों ने सभी जगहों के दरवाजों को खोला। उन्हें अपने पराये का कोई विचार नहीं था। उन्होंने खुले मन से स्वेच्छा से उसी तरह सातवें द्वार में प्रवेश किया जिस तरह वे अन्य छह दरवाजों से होकर आये थे, जो सोने तथा हीरों से बने हुए थे।

श्लोक 30: चारों बालक मुनि, जिनके पास अपने शरीरों को ढकने के लिए वायुमण्डल के अतिरिक्त कुछ नहीं था, पाँच वर्ष की आयु के लग रहे थे यद्यपि वे समस्त जीवों में सबसे

वृद्ध थे और उन्होंने आत्मा के सत्य की अनुभूति प्राप्त कर ली थी। किन्तु जब द्वारपालों ने, जिनके स्वभाव भगवान् को तनिक भी रुचिकर न थे, इन मुनियों को देखा तो उन्होंने उनके यश का उपहास करते हुए अपने डंडों से उनका रास्ता रोक दिया, यद्यपि ये मुनि उनके हाथों ऐसा बर्ताव पाने के योग्य न थे।

श्लोक 31: इस तरह सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति होते हुए भी जब चारों कुमार अन्य देवताओं के देखते देखते श्री हरि के दो प्रमुख द्वारपालों द्वारा

प्रवेश करने से रोक दिये गये तो अपने सर्वाधिक प्रिय स्वामी श्रीहरि को देखने की परम उत्सुकता के कारण उनके नेत्र क्रोधवश सहसा लाल हो गये।

श्लोक 32: मुनियों ने कहा : ये दोनों व्यक्ति कौन हैं जिन्होंने ऐसी विरोधात्मक मनोवृत्ति विकसित कर रखी है। ये भगवान् की सेवा करने के उच्चतम पद पर नियुक्त हैं और इनसे यह उम्मीद की जाती है कि इन्होंने भगवान् जैसे ही गुण विकसित कर रखे होंगे? ये दोनों व्यक्ति वैकुण्ठ में

किस तरह रह रहे हैं? इस भगवद्धाम में किसी शत्रु के आने की सम्भावना कहाँ है? पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् का कोई शत्रु नहीं है। भला उनका कौन ईर्ष्यालु हो सकता है? शायद ये दोनों व्यक्ति कपटी हैं, अतएव अपनी ही तरह होने की अन्यों पर शंका करते हैं।

श्लोक 33: वैकुण्ठलोक में वहाँ के निवासियों तथा भगवान् में उसी तरह पूर्ण सामञ्जस्य है, जिस तरह अन्तरिक्ष में बृहत् तथा लघु आकाशों में पूर्ण सामञ्जस्य रहता है। तो इस

सामञ्जस्य के क्षेत्र में भय का बीज
क्यों है? ये दोनों व्यक्ति
वैकुण्ठवासियों की तरह वेश धारण
किये हैं, किन्तु उनका यह
असामञ्जस्य कहाँ से उत्पन्न हुआ?

श्लोक 34: अतएव हम विचार
करें कि इन दो संदूषित व्यक्तियों को
किस तरह दण्ड दिया जाया जो दण्ड
दिया जाय वह उपयुक्त हो क्योंकि इस
तरह से अन्ततः उन्हें लाभ दिया जा
सकता है। चूँकि वे वैकुण्ठ जीवन के
अस्तित्व में द्वैध पाते हैं, अतः वे
संदूषित हैं और इन्हें इस स्थान से

भौतिक जगत में भेज दिया जाना चाहिए जहाँ जीवों के तीन प्रकार के शत्रु होते हैं।

श्लोक 35: जब वैकुण्ठलोक के द्वारपालों ने, जो कि सचमुच ही भगवद्भक्त थे, यह देखा कि वे ब्राह्मणों द्वारा शापित होने वाले हैं, तो वे तुरन्त बहुत भयभीत हो उठे और अत्यधिक चिन्तावश ब्राह्मणों के चरणों पर गिर पड़े, क्योंकि ब्राह्मण के शाप का निवारण किसी भी प्रकार के हथियार से नहीं किया जा सकता।

श्लोक 36: मुनियों द्वारा शापित होने के बाद द्वारपालों ने कहा : यह ठीक ही हुआ कि आपने हमें आप जैसे मुनियों का अनादर करने के लिए दण्ड दिया है। किन्तु हमारी प्रार्थना है कि हमारे पछतावे पर आपकी दया के कारण हमें उस समय भगवान् की विस्मृति का मोह न आए जब हम नीचे नीचे जा रहे हों।

श्लोक 37: नाभि से उगे कमल के कारण पद्मनाभ कहलाने वाले तथा सदाचारियों की प्रसन्नता के रूप भगवान् को उन सन्तों के प्रति अपने

ही दासों के द्वारा किये गये अपमान का उसी क्षण पता चल गया। वे अपनी प्रेयसी लक्ष्मी सहित उस स्थान पर उन चरणों से चलकर गये जिनकी खोज संन्यासी तथा महामुनि करते हैं।

श्लोक 38: सनक इत्यादि मुनियों ने देखा कि भगवान् विष्णु जो भावमय समाधि में पहले उनके हृदयों के ही भीतर दृष्टिगोचर होते थे अब वे साकार रूप में उनके नेत्रों के सामने दृष्टिगोचर हो रहे हैं। जब वे छाता तथा चामर जैसी साज-सामग्री सहित अपने संगियों के साथ आगे आये तो

श्वेत चामर के बालों के गुच्छे धीमे धीमे हिल रहे थे, मानो दो श्वेत हंस हों तथा अनुकूल हवा से छाते से लटक रही मोतियों की झालरें भी हिल रही थीं मानो श्वेत पूर्णचन्द्रमा से अमृत की बूँदें टपक रही हों, अथवा हवा के झोंके से बर्फ पिघल रही हो।

श्लोक 39: भगवान् सारे आनन्द के आगार हैं। उनकी शुभ उपस्थिति हर एक के आशीष के लिए है और उनकी स्नेहमयी मुस्कान तथा चितवन हृदय के अन्तरतम को छू लेती है। भगवान् के सुन्दर शरीर का

रंग श्यामल है और उनका चौा
वक्षरस्थल लक्ष्मीजी का विश्रामस्थल
है, जो समस्त स्वर्गलोकों के शिखर
रूपी सम्पूर्ण आध्यात्मिक जगत को
महिमामंडित करने वाली हैं। इस तरह
ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भगवान्
स्वयं ही आध्यात्मिक जगत के
सौन्दर्य तथा सौभाग्य का विस्तार कर
रहे हों।

श्लोक 40: वे करधनी से
अलंकृत थे, जो उनके विशाल कूल्हों
को आवृत्त किये हुए पीत वस्त्र पर
चमचमा रही थी। वे ताजे फूलों की

माला पहने थे, जो गुंजरित भौरों से लक्षित थी। उनकी सुन्दर कलाइयों पर कंगन सुशोभित थे और वे अपना एक हाथ अपने वाहन गरुड़ के कन्धे पर रखे थे तथा दूसरे हाथ से कमल का फूल घुमा रहे थे।

श्लोक 41: उनका मुखमण्डल गालों से सुरस्पष्ट हो रहा था, जो उनके बिजली को मात करने वाले मकराकृत कुण्डलों की शोभा को बढ़ा रहे थे। उनकी नाक उन्नत थी और उनका सिर रत्नजटित मुकुट से आवृत था। उनकी बलिष्ठ भुजाओं के मध्य एक

मोहक हार लटक रहा था और उनकी गर्दन कौरस्तुभ मणि से विभूषित थी।

श्लोक 42: नारायण का अनुपम सौन्दर्य उनके भक्तों की बुद्धि द्वारा कई गुना वर्धित होने से इतना आकर्षक था कि वह अतीव सुन्दरी लक्ष्मी देवी के गर्व को भी पराजित कर रहा था। हे देवताओ, इस तरह प्रकट हुए भगवान् मेरे द्वारा, शिव जी द्वारा तथा तुम सबों के द्वारा पूजनीय हैं। मुनियों ने उन्हें अतृप्त आँखों से आदर अर्पित किया और

प्रसन्नतापूर्वक उनके चरणकमलों पर
अपना अपना सिर झुकाया।

श्लोक 43: जब भगवान् के
चरणकमलों के अँगूठों से तुलसीदल
की सुगन्ध ले जाने वाली मन्द वायु
उन मुनियों के नथुनों में प्रविष्ट हुई तो
उन्हें शरीर तथा मन दोनों में परिवर्तन
का अनुभव हुआ यद्यपि वे निर्विशेष
ब्रह्म ज्ञान के प्रति अनुरक्त थे।

श्लोक 44: उन्हें भगवान् का
सुन्दर मुख नीले कमल के भीतरी
भाग जैसा प्रतीत हुआ और भगवान्
की मुसकान खिले हुए चमेली के फूल

सी प्रतीत हुई। मुनिगण भगवान् का मुख देखकर पूर्णतया सन्तुष्ट थे और जब उन्होंने उनको अधिक देखना चाहा तो उन्होंने उनके चरणकमलों के नाखूनों को देखा जो पन्ना जैसे थे। इस तरह वे भगवान् के शरीर को बारम्बार निहार रहे थे, अतः उन्होंने अन्त में भगवान् के साकार रूप का ध्यान किया।

श्लोक 45: यही भगवान् का वह रूप है, जिसका ध्यान योगविधि के अनुयायी करते हैं और ध्यान में यह योगियों को मनोहर लगता है। यह

काल्पनिक नहीं, अपितु वास्तविक है
जैसा कि महान् योगियों ने सिद्ध किया
है। भगवान् आठ प्रकार की सिद्धियों
से पूर्ण हैं, किन्तु अन्यो के लिए ये
पूर्णरूप में सम्भव नहीं हैं।

श्लोक 46: कुमारों ने कहा : हे
प्रिय प्रभु, आप धूर्तों के समक्ष प्रकट
नहीं होते यद्यपि आप हर एक के हृदय
के भीतर आसीन रहते हैं। किन्तु जहाँ
तक हमारा सम्बन्ध है, हम आपको
अपने समक्ष देख रहे हैं यद्यपि आप
अनन्त हैं। हमने आपके विषय में
अपने पिता ब्रह्मा के द्वारा अपने कानों

से जो कथन सुने हैं, वे अब आपके कृपापूर्ण प्राकट्य से वस्तुतः साकार हो गए हैं।

श्लोक 47: हम जानते हैं कि आप परम सत्य अर्थात् परमेश्वर हैं, जो अपने दिव्य रूप को अकलुषित (विशुद्ध) सतोगुण में प्रकट करते हैं। आपका यह दिव्य शाश्वत रूप आपकी कृपा से ही अविचल भक्ति के द्वारा उन मुनियों द्वारा समझा जाता है जिनके हृदय भक्तिमयी विधि से शुद्ध किये जा चुके हैं।

श्लोक 48: वे व्यक्ति जो वस्तुओं को यथारूप में समझने में अत्यन्त पटु और सर्वाधिक बुद्धिमान हैं अपने को भगवान् के शुभ कार्यों तथा उनकी लीलाओं की कथाओं को सुनने में लगाते हैं, जो कीर्तन तथा श्रवण के योग्य होती हैं। ऐसे व्यक्ति सर्वोच्च भौतिक वर की, अर्थात् मुक्ति की भी परवाह नहीं करते, स्वर्गलोक के भौतिक सुख जैसे कम महत्वपूर्ण वरों के विषय में तो कुछ कहना ही नहीं।

श्लोक 49: हे प्रभु, हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि जब तक हमारे

हृदय तथा मन आपके चरणकमलों की सेवा में लगे रहें, हमारे शब्द (आपके कार्यों के कथन से) सुन्दर बनते रहें जिस तरह आपके चरणकमलों पर चढ़ाये गये तुलसीदल सुन्दर लगने लगते हैं तथा जब तक हमारे कान आपके दिव्य गुणों के कीर्तन से सदैव पूरित होते रहें, तब तक आप जीवन की जिस किसी भी नारकीय स्थिति में हमें जन्म दे सकते हैं।

श्लोक 50: अतः हे प्रभु, हम भगवान् के रूप में आपके नित्य

स्वरूप को सादर नमस्कार करते हैं
जिसे आपने इतनी कृपा करके हमारे
समक्ष प्रकट किया है। आपका परम
नित्य स्वरूप अभागे अल्पज्ञ व्यक्तियों
द्वारा नहीं देखा जा सकता, किन्तु हम
इसे देखकर अपने मन में तथा दृष्टि में
अत्यधिक तुष्ट हैं।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव